

Title: Regarding pathetic economic situation of weavers in the country.

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): सभापति जी, आज देश में बुनकरों की जो स्थिति है, वह किसी से छुपी नहीं है। किसी समय में देश की अर्थव्यवस्था में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता था, परन्तु सरकार के उदासीन खड़े होने ने बुनकरों की आर्थिक स्थिति को दयनीय बना दिया है, जिस कारण ये सामाजिक रूप से भी अलग-थलग पड़ गये हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र शिवहर में भारी संख्या में बुनकर परिवार हैं, परन्तु कच्चा माल न मिल पाने एवं उसके महंगे होने के कारण उन्हें अपना रोजगार करने में आज काफी दिक्कत महसूस हो रही है। आज की तारीख में उनमें से अधिकांश परिवार बेरोजगार होने के कारण अपने परिवारों का तालन-पालन करने में असमर्थ हैं तथा उनके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा एवं अन्य विकास कार्य समुचित रूप से नहीं कर पा रहे हैं। सरकार ने उनके लिए अनेकों योजनाएं बना रखी हैं और समय-समय पर उनका कर्जा भी माफ किया है, परन्तु इनकी समस्याओं को दूर करने के लिए बेहतर होगा कि उनके लिए रोजगार की व्यवस्था की जानी चाहिए, जैसे कि मनरेगा योजना के तहत बुनकरों को भी जोड़कर, रोजगार मुहैया कराया जा सकता है, जिससे उन्हें कम से कम 100 दिनों का रोजगार तो मिल सकेगा।

सभापति महोदय : आपकी बात आ गई है।

श्रीमती रमा देवी : मुझे लगता है कि सरकार के इस कदम से बदहाल बुनकर समाज को काफी लाभ मिलेगा तथा साथ ही साथ मनरेगा जैसी महत्वाकांक्षी योजना की भी सार्थकता बढ़ेगी।

अतः सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि देश के बुनकरों की बदहाली एवं उनकी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें भी मनरेगा योजना से जोड़कर रोजगार मुहैया कराया जाये।